[Social Issues and Environmental Problems,Vol.3 (Iss.9:SE): Sep, 2015] ISSN- 2350-0530(O) ISSN- 2394-3629(P)
Impact Factor: 2.035 (I2OR)
DOI: https://doi.org/10.29121/granthaalayah.v3.i9SE.2015.3260

INTERNATIONAL JOURNAL OF RESEARCH – GRANTHAALAYAH
A knowledge Repository

नदियों में प्रदूषण और हम

वन्दना अग्निहोत्री
मा.जी.बा.शा.स्ना. कन्या महाविद्यालय इन्दौर

सारांश

जल को बचाए रखना सभी की चिन्ता का विषय है, वैज्ञानिक राजनेता, बुद्धिजीवी, रचनाकार सभी की चिन्ता है, जल कैसे बचे ? दुनियाँ को अर्थात पृथ्वी को वृक्षों को, जंगलो को, पहाड़ों को, हवा को, पानी को बचाना है। पानी को बचाया जाना बहुत जरूरी है। पृथ्वी बच सकती है, वृक्ष जंगल, पहाड़ और मनुष्य, पशु, पक्षी सब बच सकते है, यदि पानी को बचा लिया गया और पानी पृथ्वी पर है ही कितना? पृथ्वी पर उपलब्ध सारे पानी का 97.4% पानी समुद्र का खारा जल है, जो पीने लायक नही है, 1.8% जल ध्रुवों पर बर्फ के रूप में विद्यमान है और पीने लायक मीठा पानी केवल 0.8% है जो निरंतर प्रदूषित होता जा रहा है। 'जल ही जीवन है', जल अमृतमय है वेदों में इसलिए जल की अभ्यर्थना की गई है।

जल के प्रति कृतज्ञता तो हम व्यक्त कर रहे है, उनकी रक्षार्थ क्या कर रहे है ? सरस्वती तो पहले ही लुप्त हो गई थी, गंगा और यमुना भी महानगरों के किनारे प्रदूषित होती जा रही है उनका मूल अस्तित्व ही खतरे में है, नर्मदा भी धीरे–धीरे प्रदूषित हो रही है। कमोवेश सभी नदियाँ सिकुडती जा रही है। कभी लोग नदियों के साथ सामंजस्य से रहा करते थे । जब मनुष्य असभ्य था, तब नदियाँ स्वस्थ और स्वच्छ थी।

आज जब मनुष्य सभ्य हो गया तो नदियाँ मलिन और विषाक्त हो गई है। उन दिनो नदियों में स्वंय सफाई करने की क्षमता थी। परन्तु बढ़ते हुए प्रदूषण के कारण नदी अपनी यह क्षमता खोती जा रही है। जल प्रदूषण के विरूद्ध रण–भेरी बजाने का समय आ गया है।

उर्वरकों के अंधाधुध उपयोग से कृषि के लिए हानिकारक कीट तो नष्ट हो ही गए, साथ ही दूसरे जीव भी समाप्त हो गए।

वनस्पतियों के सहारे जीने वाले जीव–जंतु भी जीव रहित हो गए, गीध आदि जो वायुमण्डल को स्वच्छ रखा करते थे, नष्ट होते – होते नष्ट हो चले, इस दुर्घट योग से दुनिया कैसे बचे । '' 1 त्रिलोचन

जल को बचाए रखना सभी की चिन्ता का विषय है, वैज्ञानिक राजनेता, बुद्धिजीवी, रचनाकार सभी की चिन्ता है, जल कैसे बचे ? दुनियाँ को अर्थात पृथ्वी को वृक्षों को, जंगलो को, पहाड़ों को, हवा को, पानी को बचाना है। पानी को बचाया जाना बहुत जरूरी है। पृथ्वी बच सकती है, वृक्ष जंगल, पहाड़ और मनुष्य, पशु, पक्षी सब बच सकते है, यदि पानी को बचा लिया गया और पानी पृथ्वी पर है ही कितना? पृथ्वी पर उपलब्ध सारे पानी का 97.4% पानी समुद्र का खारा जल है, जो पीने लायक नही है, 1.8% जल ध्रुवों पर बर्फ के रूप में विद्यमान है और पीने लायक मीठा पानी केवल 0.8% है जो निरंतर प्रदूषित होता जा रहा है। 'जल ही जीवन है', जल अमृतमय है वेदों में इसलिए जल की अभ्यर्थना की गई है।

'' या आपो दिव्या उत वा रूवन्ति खनित्रिभा उत वा याः स्वंयजल ।
समुद्रार्था या शुचयः पावकरता आपो देवीरिह मामवन्तु ।। '' 2

अर्थात जो जल अंतरिक्ष में उत्पन्न होते है और जो जल नदी आदि के रूप में बहते है, जो जल नहर कुए आदि के रूप में खोदने से उत्पन्न होते है, और जो जल झरनों आदि के रूप में स्वंय होते है, जो समुद्र में जाकर मिल जाने वाले है, जो दीप्तिमान एवं पवित्रकारक है, वे दिव्य गुणों से सम्पन्न जल इस लोक में हमारी रक्षा करें और हम लोकवासी इस जल की रक्षार्थ क्या कर रहे है ? ऋषियों ने जिस जल को ' आपो ज्योति रसोऽमृतम ' अर्थात ज्योति रस और अमृत कहा है। इसके लिए हम क्या कर रहे है ? 'सुजलाम ' के संरक्षण

के बिना ' सुफलाम ' कहॉ से आऐंगे? 'मलयज शीतलाम ' कैसे होगी ? यह भारत भूमि ' शस्य शामलाम् ' कैसे बनेगी ? कहाँ से आता है यह जल समुद्रों का खारा पानी मेघ बन जब धरती पर बरसता है तो अमृत बन जाता है, मन को सरसता है, हरषता है, तपती धरती की प्यास शांत करता है, धरती के बीज को अंकुरण देता है, कृषक को देता है, फसल और उपजाता है अन्न।

''पृथ्वी, मौसम, आदमी, पोखर, मछली, धान,
सबके होठों पर रची पानी ने मुस्कान।''3

मेघ बरस कर नदियों को जल से भर देते है, नदियाँ जो जीवन दायिनी होती हैं। भारत मै तो नदियाँ पाप नाशिनी, पावन एवं पूज्य है। हमारे पूर्वज नदियों को अपनी जीवन – रेखा ही मानते थे, वह पुराणों से लेकर आधुनिक धर्मग्रंथो में भी गंगा, यमुना, गोदावरी, सरस्वती, नर्मदा, सिन्धु और कावेरी नदियों के जल को अंजुरियो में भरकर ही भगवान और प्रकृति का आह्वान करने का प्रावधान एक तरह नदियों के प्रति कृतज्ञता और श्रद्धा व्यक्त करने का सर्वश्रेष्ठ उपाय रहा है। 4

किसी भी देश के चहुँमुखी विकास के लिए वहाँ की नदियों का महत्वपूर्ण योगदान होता है। भारत एक कृषि–प्रधान देश है इसलिये नदियों का महत्व और अधिक बढ़ जाता है। प्राचीन सभ्यताओं व नगरों का विकास नदी घाटियों में ही हुआ है। सिंधु घाटी, नील घाटी, दज़ला फरात तथा चीनी सभ्यताएँ इसके उदाहरण है। नदियों से न केवल कृषि हेतु आवश्यक जल की आपूर्ति होती है वरन् इनसे पेयजल, विद्युत, मछली पालन, व अन्य कार्यो हेतु आवश्यक जल संसाधन के रूप में प्राप्त होता है।

भारत एक विशाल राष्ट्र है और यहाँ नदियों का जाल सा बिंछा है। भारत में दो प्रकार की नदियाँ है, एक जो हिमालय से निकलती है जिसमें वर्ष भर जल मिलता है। ये नदियाँ अपने आसपास के क्षेत्र को हरा–भरा रखती है। इनसे पेयजल भी मिलता है और जल–विद्युत भी मिलता है। दूसरी प्रायद्वीपीय नदियाँ आदि है, जिनका उद्‌गम किसी पहाड़ी प्रदेशों से होता है। जल ऐसा संसाधन है जिसके बिना जीवन संभव नही है। वर्तमान में मानव जाति को स्वच्छ जल उपलब्ध कराने वाली नदियों के अस्तित्व पर संकट छा गया है और वह भी मानव जाति के कारण ही। लोगो ने इनका इतना दोहन किया है कि इनमें पानी कम होता जा रहा है। '' जनता इनमें इतना गंदा विषैला पदार्थ मिला रही है कि 'इन्हे गंदगी के लिये डंपिग स्टेशन' कहा जाने लगा है।''5 भारत में मानसून द्वारा 3000 घन कि.मी. जल प्राप्त होता है किन्तु कुछ ही समय में वह प्रदूषित हो जाता है। यहाँ नदियों का 50% जल प्रदूषित है। दूषित जल पीने से मनुष्य का स्वास्थ्य शीघ्र खराब हो जाता है।

जल के प्रति कृतज्ञता तो हम व्यक्त कर रहे है, उनकी रक्षार्थ क्या कर रहे है ? सरस्वती तो पहले ही लुप्त हो गई थी, गंगा और यमुना भी महानगरों के किनारे प्रदूषित होती जा रही है उनका मूल अस्तित्व ही खतरे में है, नर्मदा भी धीरे–धीरे प्रदूषित हो रही है। कमोवेश सभी नदियाँ सिकुडती जा रही है। कभी लोग नदियों के साथ सामंजस्य से रहा करते थे । जब मनुष्य असभ्य था, तब नदियाँ स्वस्थ और स्वच्छ थी।

आज जब मनुष्य सभ्य हो गया तो नदियाँ मलिन और विषाक्त हो गई है। उन दिनो नदियों में स्वंय सफाई करने की क्षमता थी। परन्तु बढ़ते हुए प्रदूषण के कारण नदी अपनी यह क्षमता खोती जा रही है। जल प्रदूषण के विरूद्ध रण–भेरी बजाने का समय आ गया है।6

अगर अब नही चेते तो 'सारे जहाँ से अच्छा हिन्दोस्ताँ हमारा' गीत मे से
'गोदी में खेलती हैं, जिसके हजारों नदियाँ ' पंक्ति हटाना पड़ जाएगी। नदियाँ किसी भी देश की सांस्कृतिक पहचान है। यदि नदियों की ओर ध्यान नही दिया तो ' छुद्र नदी जलभरी उतराई, जस थोरे धन खल इतराई ' की तरह बड़ी – बड़ी नदियाँ छोटी हो जाऐंगी और थोड़ी वर्षा से भर जाऐगी और सदानीरा तो शायद कोई नदी ही न हो। इसलिए कवि अनुरोध करता है –

''नदी तो अमृता है, सब जगह बहेगी वो,
नदी कहीं की भी हो, बस नदी रहेगी वो,
नदी को बहने दो, सब कुछ वही संजोएगी,
नदी अंग कटेंगें तो नदी रोएगी, नदी को बहने दो।'' 7

बहना नदी का गुणधर्म है यदि उसके किनारे को गंदला किया जाएगा तो नदियाँ पोखर हो जाएगी। जो जीवनदायिनी है नदी प्रदूषित हो जाएगी तो जीवन रस कहाँ मिलेगा। और वह गुहार लगाएगी–

"क्यों जीते है सारे समय,
फन फैलाये भुजंग मुझमें,
जबकि मुझे भी तो चाहिए,
विषहीन पर्यावरण जीने को।" 8

अब तो नदियाँ बीमार रहने लगी है। कुंभ हो या ग्रहण, अमावस्या या पूर्णिमा मकर संक्रांति या अन्य कोई पर्व लाखों की संख्या में लोग नदियों में स्नान करते है परन्तु उसे गंदला होने से कोई नही बचाता प्लास्टिक कारखाने का शेष पदार्थ, शव, शहर के गंदे पानी की निकासी नदियों को प्रदूषित करते है। अंध श्रद्धा है परन्तु चिन्ता नही है। नदियों पर देश की निर्भरता किसी से छिपी नही है। देश की पच्चीस प्रतिशत आबादी गंगा के पानी से जी रही है। भारत के बीचोबीच नर्मदा के किनारे 1281 किलोमीटर लम्बे है, ताप्ती के घाटों की लंबाई 724 किलोमीटर है। उत्तर से लेकर दक्षिण तक अनेक नदियाँ आसपास बड़ी संख्या में शहर, कस्बे और गाँवों के साथ तार से तार मिलाकर अपनी यात्रा कर रही है। फिर भी पानी के आसार अच्छे नही आ रहे है। सतह पर प्रचूर मात्रा में नदियों का जल उपलब्ध हो सकता है, लेकिन फिर भी देश की जरूरते पूरी नही हो पा रही हैं।

भारत में जल प्रबन्धन समुचित नही है। नदियों को जोड़ने की योजना पर भी पूरी तरह विचार नही किया गया है। अमेरिका आज संसाधन सम्पन्न है वहाँ 60–70 वर्ष पहले ही नदियों को जोड़ लिया गया था। औद्यौगीकरण वहाँ नदियों को जोड़ने से ही संभव हुआ है। आज भारत के पास प्रतिव्यक्ति लगभग 1870 क्यूबिक मीटर प्रतिवर्ष के हिसाब से पानी उपलब्ध है। यह मात्रा विश्व के विकसित देशों की तुलना में बहुत कम है। 2050 तक प्रतिवर्ष जल की उपलब्धता 1000 क्यूबिक मीटर से भी कम हो जाने की संभावना है। यह एक भयानक तस्वीर है।

भारत सरकार ने 'नदी जोड़ो कार्यक्रम बनाये' सन् 1960 में एक प्रारूप बनाया गया। इसके पश्चात 1972 में के.एल. राव ने औपचारिक रूप से यह परीयोजना पेश की, जिसमे कावेरी नदी को गंगा से जोड़ने का प्रस्ताव था। सन् 1977 में नदी एवं नहरो को जोडने की पहल की गई। इस दिशा में कई वर्षों तक प्रयास किये गए सन् 2002 में सरकार ने इसकी घोषणा 'अमृत क्रांति' के रूप में की। इस योजना में 37 नदियों को जोड़ने की बात कही गई थी जिसका उद्देश्य था कि कहीं भी जल की कमी न हो।

भारत में नदी प्रणाली के अर्न्तगत 1869घन किमी जल होने का अनुमान है। जिसमें 60% हिमालय की नदियों, 16% मध्यभारत की नदियों तथा 24% प्रायद्विपीय पठार की नदियों का योगदान है। जिसमे 690 घन किमी जल को उपयोग में लाया जा सकता है।

सरकार की यह नीति है कि एक नदी का पानी दूसरी नदी के पानी से मिला दिया जाए जिससे कम पानी वाले सिंचित होने वाले नदी के बेसिनों को ज्यादा पानी मिल सके। वैसे तो पर्यावरण के महत्व को समझकर ही जल स्थलियों का प्रबन्ध किया जाता है परन्तु इसके साथ ही इस मन्त्रालय ने एक पर्यावरण की देख–रेख कमेटी भी बनाई है। इससे पर्यावरण की रक्षा भी की जा सके। पारिस्थितिकी की भी क्षति न हो, इसका भी ध्यान रखा जाए तथा इस प्रकार की परियोजनाओं को पूर्ण करने मे क्षतिपूर्ति के तरीके अपनाए जाएँ। 9

बढ़ती जनसंख्या, ओद्योगिकरण में वृद्धि तथा कृषि में विस्तार होने से जल की मांग बढ़ती जा रही है। अतः जल संरक्षण आज की आवश्यकता बन गई है। जल संरक्षण हेतु उफनती नदियों को सूखी नदी को नहरों द्वारा जोड़े जाने के साथ–साथ वर्षा जल को सावधानीपूर्वक भूगर्भ में एकत्रित करने की अनिवार्यता विकसित करने की आवश्यकता है।

जनसंख्या के अनुपात में जल उपलब्धता

वर्ष	जनसंख्या (करोड़ में)	जल उपलब्धता घन मीटर प्रतिवर्ष प्रति व्यक्ति
1947	40	5000

2000	100	2000
2025	139	1500
2050	160	1000

जलसंकट पर विश्वव्यापी चिन्ता व्यक्त की गई है। पृथ्वी सम्मेलनों 1972–स्टाक होम, 1992–रियो, 2002–जोहांसबर्ग में पानी पर चिन्ता व्यक्त की गई परन्तु हल नही निकले। वर्ष 2004 को यूनेप ने जल वर्ष घोषित किया। अब भी यदि जल के प्रति सचेत नही हुए तो जल के लिए युद्ध दूर नही।

अर्थव्यवस्था को मजबूती देने के लिए नदियों को जोड़ने वाली परियोजना महत्वपूर्ण है, क्योंकि उत्तर भारत की नदियों में पानी कम होता जा रहा है। इन नदियों को जोडने से पानी की कमी वाले प्रदेशों के किसानों को पर्याप्त पानी मिल सकेगा। इससे भारत की सिचांई क्षमता वर्ष 2050 तक बढ़कर 16 करोड़ हेक्टेयर तक पहुच जायेगी। जबकि पारम्परिक तरीके से सिंचाई से 14 करोड़ जमीन को ही पानी मिल पा रहा है। साथ ही नदियों के पानी से 34 मेगा बाईट बिजली भी तैयार हो सकेगी। भारत में नदियों को जोडने की परियोजना दुनियाँ की सबसे बड़ी परियोजना होगी। जो नदियों के जल संरक्षण से ही संभव होगी। केन्द्र और राज्य सरकार के प्रयास से काफी सकारात्मक परिणाम सामने आ रहे है।

देश का कोई न कोई भाग बाढ़ या सूखे की चपेट में रहता है जल प्रणालियों के कारगर प्रबन्धन के लिए राष्ट्रीय जल नीति 1987 व 2002 में बनाई गई थी। जनसंख्या वृद्धि, जलवायु परिवर्तन के प्रभाव, भविष्य में जल की कमी तथा जलीय विषयों ने राष्ट्रीय जलनीति की पुनःसमीक्षा करने के लिए बाध्य किया। 28 दिसम्बर 2012 को राष्ट्रीय जल संसाधन परिषद् द्वारा अपनी छठी बैठक में प्रधानमन्त्री मनमोहनसिंह जी ने कहा कि जल प्रबन्धन पर प्रस्तावित विधि तन्त्र को सही परिप्रेक्ष्य मे देखना चाहिए। उन्होने कहा कि भविष्य में पानी की कमी सामाजिक एवं आर्थिक विकास में रूकावट बन सकती है। यह नीति तभी सफल हो सकेगी जब जनता इसमें पूरा सहयोग करेगी।

संदर्भ

1. *जीने की कला – विलोचन।*
2. *ऋग्वेद, मण्डल 7, सूक्त 49, आप सूक्त।*
3. *दिनेश शुक्ल, समय जल, पृ.194 नया ज्ञानोदय मार्च 2004।*
4. *उमेश त्रिवेदी, पृ. 04, नई दुनिया 04.02.08*
5. *अमृतलाल वेगद्र, नदियों में फिर से प्राण प्रतिष्ठा करे, पृ.74 नया ज्ञानोदय मार्च 2004।*
6. *वीरेन्द्र मिश्र–नदी– पृ. 70 नया ज्ञानोदय मार्च 2004।*
7. *प्रेमशंकर रघुवंशी, तुम पूरी पृथ्वी हो कविता पृ.149।*
8. *विश्व व्यापी जल संकट – शुकदेव प्रसाद पृ. 276 नया ज्ञानोदय मार्च 2004।*